Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –6, Dec 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

सैरंध्री और महाभारत

डॉ. सौदागर साळुंखे
M.H.M. कॉलेज मोडनिंब.

महाभारत के आदिपर्व केअनुसार राज्यप्राप्ती की लालसा से दुर्योधन ने अपने पिता धृतराष्ट्र की सहायता सेपांडवो कों वरणावर्त भेजा और लाक्षागृह में जलाकर समाप्त करने की योजना बनाई | लेकीन विदूर के सचेत करने से पांडव उस हादसे से बच निकले और एकचक्रा नगरी में ब्रह्माचारीयें के वेश में रहने लगे | उसी समय उन्होने पांचाल देश के राजा यज्ञसेन की पुत्नी द्रोपदी के स्वयंवर का समाचार सुना और उसमे हिस्सा लिया | अर्जुन ने द्रोपदी केा प्राप्त किया तथा माता कुंती के कहने पर वह पांचो पांडवो की पत्नी बनी | द्रोपदी से विवाह के बाद पांडव हस्तिनापुर आए और धृतराष्ट्र से आधा राज्य मांगा | ध्रतराष्ट्रने पांडवों केा खांडव प्रस्थ दे दिया | वहांपांडवो ने इंद्रप्रस्थ नामक नई राजधानी की निर्माण किया | दुर्योधन राजसुय यश के बहानक एक बार इंद्रप्रस्थ देखने आया था और अज्ञावश जलाशयमें गिर गया था | उस समय द्रोपदी केा सहज हँसी आयी | दुर्योधन अपमानीत हुआ और मामाशकुनी की सहायता से युधिष्ठर केा कपटनिति से जुए में हराया | संपुर्ण राज्य,भाई तथा पत्नी केा दाव पर लगाकर युधीष्ठर कंगाल हेा गए | द्रोपदी का दासी के रूप में दुर्योधन ने भरी सभा में अपमान किया | ध्रतराष्ट्र की मध्यस्थता से पांडवो केा राज्य वापस किया गया|

सभापर्व के अनुसार दुर्योधन ने दुबारा पांडवों केा दयुत क्रीडा के लिए निर्माण दिया | शर्त थी जेा भी जुए में हारेगा अपने भाईयें के साथ रह वर्ष वन में वितायेाग | जिसमें अंतीम वर्ष अज्ञातवास हेागा | मामा शकुनी की सहायता से दुर्योधननू युधिष्ठर केा फीर हराया और वनवास के लिए भेज दिया | पांडवों ने अनेक संकटेा केा झेलते हुए १२ बरस वन में बिताये | लेकीन अज्ञातवास का अंतीम वर्ष कठिन था | अतःउन्होने अपना नाम और पहचान छुपाकर विराटनगर में रहने का निर्णय लिया | युधिष्ठर कंक (ब्राम्हण वेश) बने,भीम वल्लव (रसेाइया) बना, अर्जुन ब्रहन्नलला (स्त्री वेश में संगीत, नृत्य पढाना) बना, नकुल गंथिक(घेाडें की रखवाली) बना, सहदेवने तंपीपाल (चरवाहे का काम) का कार्य स्वीकार किया और द्रोपदी सैरधी (रानी महल में शिल्प कर्म करनेवाली दासी) बनी |

‘ सैरंधी ’ के कथानक का श्रीगणेशा करते वक्त गुप्त जी ने सबके लिए सुफल –दायिनी सीता जी का पवित्र नामस्मरण किया है | उन्हें अहिंसा रुपिणी, पुण्यशील तथा मर्यादा की मूर्ती कहकर द्रोपदीओर इसी श्रृंखला की अगली कडी के रूप में संकेत है |

बुरे कर्म का फल कभी भी अच्छा नही हेाता | जेा पापी लेाग हेाते है, उन्हें कभी भी सुख, शांति और आराम प्राप्त नहीं हेाता | अविचारी लेांगेां के ललाट पर ही मृत्यु वास करती है | शील या चरित्र से गिरने वाला अपने जीवन केा संभल नहीं पाता | अविवेकी लेाग अपना नाश करने के लिए स्वंय ही कारण हेाते है | कीचक जैसे मुर्ख लेाग भी यम-पाश में स्वंय ही अटक जाते है |

जब राजा विराट के यहाँ वीर पांडव तथा द्रोपदी अज्ञातवास में छिपकर रहते थे | तब एक बार सैरंधी बनी द्रोपदी की अतिव शेाभा पर नांच वृति का सेनापती कीचक मेाहित हुआ | जैसे सैरंधी का सौंदर्य कीचक ने देखा,

मानेा उसकी स्थिती वैसे ही हुई जैसे ग्रीस्म के ताप से घायल बने हाथी केा कमल से भरा तलाव दिखाई देता है | द्रेापदी दासी बनी थी, उसनेसाधारण मलिन वेश धारण किया था | लकीन वंश में लगी पवि अग्नि के समान उसकी योाभा छिप न सकी | शैवाल में लिपटी कमल-कली तथा मेघाच्छादित चंद्रकला जिस प्रकार मन मेाह लेती है,उसी प्रकार छिपा हुआ पांचाली का सौंदर्य भी प्रकट हेा रहा था | कवि कहते है की, सुगठित शरीर, अनुपम केशराशी, मतवाली चाल, काली-काली और कानें तक फैली बडे-बडे आंखे, गुण और रुप की स्वाभाविक ज्येाती पांचाली की कांती केा असामान्य बना चुकी थी | अतः उसके लिए छिपना मस्कील था |

विराटनगर के राजा विराट की पत्नी सुदेण्णा की दासी बनी द्रेापदी परम सयांनी थी | दासी बनने के बाद रानी की रानी लग रही थी | अब ऐसीं परम सौादर्यवती दासीं केा देख किचक की सुध-वुध चली गई | वह उसके सौंदर्य में पागल हुआ | कीचक मुर्ख मदांध और अन्यायी हेाने के साथ-साथ राजा विराट का साला तथा राणी सुदेष्णा का भाई था |

घमेंडी एवं शक्तिशाली येाध्दा हेाने बाल कीचक मत्सराज विराट का सेनानी या सेनापती था | गर्व एवं घमंड के साथ वह हमेशा मनमानी करता था | स्वं राजा विराट भी उससे सशंक रहते थे अन्य अधिकारी भी उसके भयंकर आतंक के कारण उसके विरुध्द कुछ भी कह न पाते थे | सैरंधी के सौंदर्य केा देखकर उसकी प्यास पुरी नहीं हुई, अतः दुष्टचरित्र कीचक कृष्णा से बेाला की, ‘ हे सैरंधी तु किस भाग्यशाली पुरूष की पत्नी है ? दासी हेाकर भी तू पार्वती एवं दुर्गा के समान रूप और गुणेां से युक्त लगती हेा | कामदेव ने तेरी भौंहेा के धनुष्य से मेरे हृदय में पुष्पवाणी की वृष्टी की है | अब मैं तेरे विरहजन्य दुःख में कब तक तडपूंगा ?’’ राजसदन में ही कीचकको समजाते हुए कहती है ‘‘हे वीर तुम सावधान हेा जाओ और ऐसे गैर वचन मत कहेा | अपने मन केा रेाक लेा और संयमी बन जाओ | मेरा भी अपना धर्म (पत्नी धमै) है, क्या मैं उसे खेा सकती हूँ ? मैं अबला भले ही हूँ, लेकीन कुलटा नहीं हूँ | मैं दीन-हीन जरूर हूँ, लेकीन लेाभी नही हूँ और कु कर्म करके इस संसार में मुझे जीना ही नही है | पर नारी पर बुरी दृष्टी डालना अनुचित है | सौभाग्य से जिसे जेा प्राप्त हुआ हेा, उसे भेागने का अधिकार किसी दुारेा केा नही है | तुम्हारे लिए यह कृत्य उचित नही है, यह निश्चित समझ लेा | निंदनीय कर्म विनाश की ओर ले जाता है और उससे विनाश अटल है | ऊपर स्वर्ग में बैठेदेवता निचे धरती पर मानव क्या करता है, इसे सुक्ष्मता से देखते है | दुष्कर्म करके सुख प्राप्त हेाता तेा सज्जन लेाग सत्कर्म करने के लिए क्येां कष्ट उठाते ? मेरे पांच पति देवत्व के अवतार है और वे अज्ञात स्थान पर रहते है | मैं हमेशा तन-मन-धन से स्वयं केा उनकी दासी समझती हुँ | सौभाग्य से ही मुझे ऐसे स्वामी प्राप्त हुए है | वे स्वयं धमै के अवतार है धर्मानुसार ही आचरण भी करते है | इसलिए हे वीर तू मुझे मत छेडो, वेइसेसह नही सकेगें | तुम्हे सुनकर तेा पता हेागा की पराक्रमी भीम किसी केा भी मार सकते है |

द्रेापदी की सभ्यतापुर्ण बातेां केा समझने की घमंडी और कामातुर कीचक में शक्ति न हेाने के कारण वह हँसने लगा और द्रेापदी केा संबेाधकर कहने लगा -‘‘ हे सैरंधी ! तेरा स्वभाव सचमुच भेाला है | तुम्हारी प्राप्ती ही मेरे लिए सबसे बडा पुण्य फल है | तुम्हारा भेाग ही मेरे लिए स्वर्ग सुख है | तुम्हारे पति के भय की बात भूल जा और कीचक की जय बेाल | तुम्हारे पांच देव पतियेां की चिंता से अधिक मुझे काम की चिंता सता रही है | मैं कब का तुम्हारा हेा चुका, तुझे भी मेरा स्वीकार करना हेागा | आज रात दिपक की ज्येाती के समान तू आ जाना और दृष्टी दान करके अपने प्राण कीरक्षा का पुण्य कमाना | तुम्हारी जेा मुर्ती मेरे हृदय में बसी है, वह मेरी आँखेा के समक्ष हर क्षण खडी हेा जाती है | अतः आज जल्द से जल्द वह घडी प्रत्यक्ष आ जाय यही अतीव लालसा है | यह कहकर किचक घंमड के साथ चला गाया | उसकी निर्लज्जतापुर्ण बांते सुनकर कृष्णा डर के कारण जडवत बनी और राजभवन उसे पर्वत की निर्जन गुफा समान डरावना लगने लगा | ऊपर से हिंस्त्र पशु जैसा किचक उसमें दिखा | अतः भयचकित हिरनी की तरह कीचक केा देखती रही | मानेा उसकी अवस्था पर-कटी पक्षिणी की तरह असहाय हेा गई | देर तक अचेत की, तरह एकही जगह खडी रही और फिर अकस्मात चिल्लाकर बेाली की, ‘‘

केाई मुझे बचाओ आज मेरी लाज लुट न जाय | स्वर्ग या धरती पर जेा भी धर्मानुसार आचरण करने वाला हेा, उस पर मेरा भार रहेगा | अर्थात कृष्णा केा बचाने की, जिममेदारी उसकी रहेगी | कृष्णा का नामस्मरणकरते हुए, उसे पुकारती है और भरी सभा से निर्वसन हेाने से बचाने का प्रसंग उसे याद आता है | अपनी आँखेा से बहने वाली अश्रुधाराओं का अर्ध्य चढाते हुए संकट निवारण की याचना अध्युत श्रीकृष्ण के समक्ष करती है |

कीचक ने किए हुए अपमान से सैंरधी अश्रु बहा रही थी तेा दुसरी और कीचक अपनी बहन राणी सुदेष्णा से प्रश्न कर रहा था की, सैरंधी सम सखी तुमने कहँ से प्राप्त की, जेा है तेा दासी लेकिन मुझे देवी के समान तेजांमय लगती है और वह अब मेरे हृदय की स्वामीनी बन गई है | '' अपने भाई के बात सुनकर रानी रूक गई और समझाने लगी की, इस प्रकार की ठठेाली ठिक नही है, और इस ठठेाली केा सुनकर चिढने के लिए मेरे भाभी अर्थात तुम्हारी पत्नी भी यहाँ नहीं है | इस विनेाद से कदाचित तुम्हे आनंद प्राप्त हेाता हेागा | लेकीन किसीका अपमानकरनेवाला विनेाद भी बुरा है | इसे सुनकर सैरंधी भी क्रेाधित हेा जाएगी | '' साथ ही सैरंधी दासी हेाकर भी कैसी असामान्य है तथा उसके आगमन से रानी सुदेष्णा के स्वयं के गौरव में भी घाटा आ गया है, इसे समझाती है | उसके सौंदर्य तथा स्वभाव के कारण सैरंधी केा रानी ने अपनी सखी ही कैसे मान रखा है तथा अन्य दासियों किस तरह मान-सन्मान करती है,इसे भी समझाया | सैरंधी का चरित्र जटील है, वह दुखिया है लेकिन विश्व-विदीत पांचाली की सखी है | अतः उसे छेडना अनुचित बताती है | गुप्त पांडव एक दिन प्रकट हां जायेंगे तेा, उनके अन्याय के निवारणार्थ वे तुम्हे दंड दे देंगे | तुम्हें यहाँ सौंदर्यवतियें का अभाव नहीं है, अतः सैरंधी केा मत सताओ | अवलाएं तेा एक ही पुरूष हेाकर रहती है | लेकिन तुम पुरूषें केा सौ-सौ सुदरियेां का भेाग भी संपूर्ण तृपती प्रदान लहीं करता |

राणी सुदेष्णा के समझाने पर सैरंध्री के सौंदर्य से घायल बना कीचक धर्म का मार्ग अपने लिए व्यर्थ है | सैरंधी की सौंदर्य ने उसकी सुध-बुध अपने वंश में कर ली थी | उस मृगनयनी सैरंधी का प्रेम प्राप्त करना ही वह अपनी सुकिर्ती बताता है | अतः इसे सफल बनानब के लिएअपनी बहन केा ही जाल बुनने के लिए कहता है, उसके लिए सुंदरियों का अभाव लहीं है | लेकीन सहज प्राप्ती वस्तु में संतेाष नहीं हेाता | अप्राप्त वस्तु के पीछे मन दैाडता है | हठ कर बैठता है | उसे प्राप्त करने में ही वीरता महसूस हेाती है | अतः इसे सफल बनाने के लिए गंभीरतापुर्वक प्रयास की इच्छा रखता है|

अपना इरादा बताकर कामी और निर्लज्ज कीचक वहाँ से चला जाता है | मानेा अधैर्य की धारा में वह गया हेा | उाकी भगिनी सुदेष्णा मूर्ती के समान खडी रह जाती है और ऐसे नीच भाई की बहन हेाने से घृणा की वृष्टि में भीग जाती है | फिर सेाचने लगती है की, एक राज्य का रक्षक हेानेवाला मेरा बलवान भाई यही है ? जेा एक अवला से हारकर अपना गौरव, धर्म, कर्म सब कुछ दांव पर लगा रहा है | क्या पुरूषें के चारित्र्य का यही हाल है और प्रौरूप की पुष्टता पशुता का ही आश्रय ग्रहण करती है ? फिर वह सेाचती है की, सुंदरता अगर वासना निर्माण करती है,तेा खानदानी स्त्रियों उसे प्राप्त ही क्यों करती है ? काम-तृप्ती की पध्दती केा ही पुरूष प्रेम का नाम देते है, जैसे फूलें के सौंदर्य पर मेाहित न होकर कीट मधु पाने की इच्छा से उनसे लिपट जाते है | अगर पुरूषें का प्रेम पवित्र है, तेा किचक सैरंध्री को मेरे समान सहज सखी क्यों मानता और उसकी इच्छाऔ का आदर क्यों नही करता ? फिर वह सैरंध्री के बारे में सोचने लगती है की, इसे सुनकर वह क्या कहेगी तथा इस अपमान केा वह क्या चुपचाप सहंगी | साथ ही उसे कीचक की बहन हेाने से उसकी घृणा का शिकार हेाना पडेगा औरसैरंध्री की घृणा भरी दृष्टी जहरिले वाणेां के समान सुदेष्णा केा घायलकरती रहेगी | उसके समक्ष जाते वक्त शासन के नियमेां केा तेाडने वाले दोषी लेागेां के समानअपमानीत हेाना पडेगा | रानी दुबिधा में फस जाती है कि किसे और कैसे समझाउँ | कीचक तथा सैरंध्री में से किसी केा भी समझाना उसेअसंभव लगता है | फिर उसे यह चिंता सताने लगती है की, सैरंध्री केा पाने में कीचक असफल हेा जाऐगा तेा कैानसे मार्ग का अवलंब करेगा इसका पता नहीं | क्यों की स्वयंराजा भी उससेडरते है, उसे तेा किसी का भय ही नहीं है | वह कुछ भी करेगा तेा भी उसके खिलाफ

बोलने वाला इस राज्य में केाई नहीं है | विद्रेाही तथा बलशाली कीचक का क्रुरता से सब परिचित है | वह अपने मार्ग मेंकेाई बाधा स्वीकार नहीं करता | उसने राज्य-सैन्य केा भी अपने वशमें कर रखा है | अब इस संकट से बाहर आने का एक ही मार्ग वह देखती है की, कही सैरंध्री इसके लिए सममत हेा जाए तेा सुविधा हेा जायेगी | लेकीन स्वयं रानी हेाकर दूती बनकर सारंध्री के पास जाने के लिए उसकामन तैयार नहीं हेाता | मन ही मन सेाचकर डर महसूस करते हुए सयानी सैरंध्री से स्नहपुर्ण बात करते हुए रानी उसकी निस्पृह नीति की प्रशंसा करती है | सैरंध्री भी उसे बीना मेागे सबकुछ मिल रहा है, बताते हुए गनी की आज्ञानुसार बनाए हुए चित्र केा दिखाती है, जिसमें राजा विराट और झरेाखे में बैठी रानी भीम-गज युध्द केा देख रहे थे | रानी उसकी कला की प्रशंसा करती है और चितां में स्वयं केा क्येा नही लिखा, पुछंती है | साथ ही गज-युध्द के समय वललभकी विजय से पुलकित हेाने वाली सैरंध्री केा वल्लब की प्रेयसी कहती है | साथ ही समझाती है की वल्लब साधारण रसकाइया है और तुम्हारा यौवन धन उच्च पद पाने येाग्य है लेकीन सैरंध्री कुशलता पुर्वक इस बात से इन्कार करती है | फिरगनी वह चिंता अपने भाई कीचक केा देने के लिएकहती है | उसी क्षण सैरंध्री रानी का इरादा समझ जाती है और उसे यह बात असह्य हेा जाती है | अतः प्रश्न करती है की, क्या इसलिए आप भूमिका बना रही थी ? जेा आपके महान पदके लिए सेतापजनक है |

सुदेष्णा केा सैरंध्री की बाते अपमानकारक लगती है | अतः प्रश्न करती है कि, क्या तुझे इसी लिए सहारा दिया था की तू अपनी मर्यादा केा समझ न सके और मेरा अपमान करे ? गनी के आत्माभिमान ने धक्का खाया तथा सैरंध्री भी अपनी गलती समझ गई और क्षमायाचना की साथ ही यह स्पष्ट कर देती है की, किचक के पति हृदय में विश्वास न हेाने हे कारण वह आपे से बाहर हेा गई थी | यह भी बताती है की,कीचक वीर हेाकर भी उसे कैसे सताता है | अतः उसके पास न भेजने की बीनती करती है | लेकीन सैरंध्री की याचना अविस्कार करते हुए, रानी कीचक किसतरह उसके गुणेां पर मेाहित है, बताती है | यह भी बताती है की, तुम्हारी लाख गालियां सुननु की बाद भी, मै कहा करूंगी | साथ ही कीचक केा चित्र ेने का भी आदेश देती है |

रानी का आदेश सिरांधार्य समघकर सैरंध्री कीचक के महल की ओर जाने लगती है, लेकिन कुछ अशुभ हेाने की आशंका उसे सताती है | कीचक का पाप ही उसके विनाश का कारण हेागा, यह भी जानती है | फिर विधाता से प्रश्न करती है कि, पांच बार सनाथ करके अब मंझधार में क्यों वहा रहे हेा ? फिर विपत्ती केा पुकारते हुए उसका सामना करने की शक्ति प्राप्त करती है | उसहाय लेागों का सहारा राम मानकर कर्मानुसार फल का संकेत देती है | सैरंध्री केा सहज घर आते देख कीचक केा चंद्रमा जमीन पर उतरआने जैसामहसूस हेाता है | प्रेम से बिठाने लगता है | लेकिन चित्र देकर सैरंध्री वापस जाने लगती है तेा, उसे रेाककर पुरस्कार के रूप में सर्वस्व न्येाछावर करने की बातकरता है | सैरंध्री गर्दन झुकाते हुए क्षमापुर्व का पुरस्कार से इन्कार करती है | फिर भी संपुर्ण राज्य अपने वंश मेंहेा की तथा वह स्वयं सैरंध्री के वश मेंदेने की बात करता है | उसके सौंदर्य की प्रशंसा करता है तथा उसके विाह में खान-पान शयनादि कैसे विप समा बने है, बताता है | अतः दासी के रानी बनकर रहने का आग्रह करता है |

सैरंध्री उसे विष सम वचन किसी अन्य कि पत्नी सक न कहने के लिए कहती है और यह भी बताती है की, कर्मो के अनुसार जीवेां केां जगत में फल मिलता है | अपनी मर्यादा तथा धर्मानुसार आचरण अच्छा हेाता है | पाप से मिला राज्य भी त्यो देना चाहिए | अतः हे वीर तुम इस दृष्टी सेमत देखेा | प्रेम ही करना है, तेा तुम मुझे बहन पुकारेा | सती धर्म का शाप अपने मस्तक पर मत लेा | लेकीन सैरंध्री बनी कृष्णा का उपदेश कीचक के लिए अनउपजाऊ जमीन पर पानी बरसाने जैसाअनुपयुत सिध्द हुआ | कीचक सैरंध्री से कहने लगता है यह ज्ञान, ध्यान तथा ग्रंथेां की बातेरहने दे | सुयौवन की दिन-राते बार-बार नहीं आती | मृत्युके बाद क्या हेागा किसने जाना है | भविष्य की आशा में वर्तमान सुख त्यागना, मानेा अपना ही अहित करना है | अतः मानव केा वही कर्म करा चाहिए जेा मन में आता है और सुखकारक हेा | कामातुर कीचक यह कहते-कहते सैरंध्री का हाथ पकड लेता है | कीचक की निचता देखकर सती सैरंध्री क्रेाधितहुई और बिजली की गति से उसका शरीर रज्जु की तरह कंम्पित

हुआ | उसका शरीर निर्जीव और कृश दिखाई देने लगा | फिर अचानक हुंकार भरा और कालसर्प की तरह फुत्कारने लगी | उसका उग्र रूप देख कीचक का पैरें के निचे की जमीन हट गई | सैरंध्री ने उसे निर्लज्ज, नराधम कहते हुए अत्याचार का विरोध किया और चंडिका अवतार धारणकरते हुए कीचक की रूपी दानव का विनाश करने की शपथ ली | कीचक केा यह भी सुनाया की अवलाओ की गल- बाहें में आनंद देने की क्षमता है | लेकिन उसे त्रस्त करने पर उसकी आहेंसे कालानल भी निकता है | यह कहते-कहते दुष्ट कचिक से साथ छुडाने के लिए उसने बलपुर्वक झटका दिया | मदोन्मत कीचक तुफान के झोकेा से गिरने वाले वट वृक्ष की तरह मुँह के बल गिर पडा | तब वह राजा विराट की न्याय सभा की नींब हिलाने तथा उस कामी के काले कर्म का दंड दिलाने के लिए रेाती-रेाती संखेद न्यायसभा में पहुँची | उसके पिचे गिरने से अपमानीत हुआ कीचक वहाँ उसे मारने के लिए पहुँचा | थकी मुर्गी पर जैसे नेंदुआ लपकता है, वैसे ही कीचक ने सैरंध्री केा ठोकर मारी | वृक्षसे अलग हुई लता के समान सैरंध्री गिर पडी और कीचक भी गति केा संभल न पाने से मुँह के बल गिर गया | धर्मराज भी कंक बनकर वहाँ उपस्थित थे, लकिन भेद न खुले इसलिए चुप रहे | संपुर्ण सभा सह दृश्य देख " अरे-अरे " कहते हुए स्तब्ध हुई | कीचक किसी से दृष्टी मिलाए बिंना वहाँ से चला गाया | तब भरी सभा में मत्सराज केा संबोधकर कृष्णा ने प्रश्न किया की, राजग,ह में ही नारी भय से भर जाती है, ऊपर घेार अत्याचार हेाता है, जहाँके अधिकारी ही अत्याचारी है, जहाँ कुलवधुओं की लज्जा रखना कठिन है, वहाँ आप प्रजा केा कैान-सा सुख देने वाले है ? धर्म मर्यादा तेाडकर भरी सभा में कीचक ने मुझेअवला हेाकर लात मारी और उसका अन्याय देखकर भी आप चुप बैठे रहे | अतः हे वयेावृध्द राजा तुम्हारा धर्म तुम भूल गये हेा और तुम्हारी राजनिती (डरपेाक) का मर्म मेरी समझ में नहीं आ रहा है | तुममें शासन चलाने का सामर्थ्य ही नही तेा सत्ता का त्याग क्यें नही करते ? दुर्जन सेडरते हेा तेा राजदंड छूकर दूषित क्यें करते हेा?

यज्ञसेनी सैरंध्री के निर्भय वचन सुनकर विराट की राजसभा स्तब्ध हेा गई | सैरंध्री केा शांत करने के लिए कंक बने धर्मराज ने कहाँ की, तुम शांत हेा जाओ, धीरज रखेा, राजा के प्रति कठेार वचनन कहेा | तुम्हें न्याय मिलेगा, अब शीघ्र महल में चली जाओ | पांडवेा की शक्ति से संसार में सभी परिचित है, लेकिन विधी के व्यापार में किसका वश चलता है | धर्मराज की बातें का मर्म समझकर सैरंध्री अंतःपुर में चली जाती है | किसी से बातें किये बिना आंसुओ में भीगती रही | रात्री के शांत प्ररमेंभीम के पास चली गई | भीम आंखे बंद कर पडे हुए थे | लेकिन यह समाचार सुनने से उनकी भी निद्रा भंग हुई थी | द्रेापदी रेा-रेाकर अपनी व्यथा बताती है | पिछले अपमान भरे प्रसंगेा केा भी याद दिलाती है और प्रश्न करती है की, धर्म के भय से हम सब रहते है | हम से राज्य छिना गया, वन भेजा गया | फिर भी अन्याी कैारव राज्य कर रहे है और हम छिपकर अन्याय-अत्याचार सह रहे है | प्रथम राजमहल में नंगी की जा चुकी, फिर जयद्रथ द्वारा वन में हारी जा चुकी और अब कभी कीचक की गिद्ध दृष्टि मुझपर पडी है | मृत्यु से भी भयंकर यातनाएँ जिसके पांच-पांच बलशाली पति हेाउसे क्यें सहनी पड रही है ? बातें करत-करते पांचाली मूर्चित हेाकर भीम के चरणेां में गिर पडी | पानी डालकर,पंखा झलकर तथा फेरुार भीम ने उसे हेाश में लाया और कीचक का संहार करने का वचन दिया | दोनें ने गुप्त रूप से येाजना बनाई |

दुसरे दिन सैरंध्री सहज भाव से सबके साथ बातें करती रही | मानेा वहाँ केाई घटना घटी ही नही है | कीचक के साथ भी सहज हेा गई | कीचक ने उसे प्रश्नकिया की, अब तेा तेरा भ्रम चला गया, मेरे विरूध्द शिकायत का श्रम व्यर्थ चला गया | हठ छेाडेा और अपने गठीले शरीर केामेरे हवाले कर दे | कीचक की बातेां से सैरंध्री के मन में घृणा निर्माण हेा रही थी | लकिन उसे छिपाकर चेहरे पर मुसकान और लज्जाभाव ले आती है | अपने मन की चंचलता केा स्वीकारती है तथा पति उसे कैसे भूल गए है, बताती है | परिणामतः अंधेरे में उसे अकेले अपने तौयांत्रिक शाला के शयन स्थान में पागल की तरह शेाकपुर्ण रात्री कैसे बीतानी पडती है, यह भी बताती है | अंधेरे में मौका जानकर उसके शयन कक्ष मेंआने का तथा प्रेयसी बनाकर सहारा देने का वचन दिया |

“रात्री के अंधेरे में आपको कष्ट तो नहीं होगा ? “ कहकर द्रोपदी ने मंदहास किया | सैरंध्री के लिए नरक में भी आने के लिए तैयार हूँ, कहकर विजयानंद के साथ वहाँ से चला गया |

निश्चित समय और निश्चित स्थान पर मंदाध कीचक पहुँच गया | सैरंध्री की जगह भीम सोये थे | मूर्ख कीचक सैरंध्री समझ भीम से लिपट गया | भीम के लिए कोई जंगली जानवर अजगर के दाव में खुद चला आने जैसा था | भीम के अलिंगन में दुष्ट कीचक पिस उठा | दांत पिसकर संपुर्ण शक्ति के साथ भीम उसे दबाते रहे | चिल्लाने के लिए भी उसे अवकाश न मिला | गला दबाने से सांस आ-जा न सकी | मुँ, आँखे, नाक और कानों से खून बहने लगा | हड्डियाँ टूटने की आवाज हुई और कुछ ही क्षणों में उग्र कीचक नष्ट हुआ | मरने के बाद ढेले की तरह कीचक को जमिन पर फेंककर सैरंध्री को उसे देखने के लिए भीम बुलाते है | अतीव शक्तिशाली कीचक के वध का महत कार्य करने वाले भीम को देखकर स्वयं द्रैपदी भी सहम गई सदय हृदया होने से उसे कीचक की मृत्यु का भी दुःख हुआ और वह समझ गई कि कोई कितना भी शक्तिशाली हो, अनरिती करता है तो उसकी मृत्यु निश्चित है |

आरंभ में कथा प्रवेश की अस्पष्टता और अंत में कथानक को जल्द समेटने का प्रयास होने के बावजूद भी ‘सैरंध्री’ खंडकाव्य का कथानक रोचक, औत्सुक्यवर्धक और प्रवाहामय है | महाभारत के मूल कथानक में यहाँ कहीं भी बाधा उत्पन्न नहीं की गई है |